REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 8 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2019

भारत में कृषि उत्पादकता और किसानों की आय: चुनौतियाँ और समाधान

डॉ. उमेश कुमार शाक्य
असि० प्रोफेसर -अर्थशास्त्र
माता भगवती देवी राजकीय महिला महाविद्यालय आँवलखेड़ा, आगरा (उत्तर प्रदेश)

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ लगभग 55-60% जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। इसके बावजूद कृषि क्षेत्र की उत्पादकता और किसानों की आय अपेक्षाकृत कम बनी हुई है। कृषि उत्पादकता में कुछ वृद्धि हुई है, जैसे गेहूँ और धान की पैदावार में सुधार, लेकिन किसानों की आय उसी अनुपात में नहीं बढ़ी। इसका अर्थ है कि उत्पादन बढ़ने के बावजूद किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है। कई संरचनात्मक और संस्थागत समस्याएँ जैसे भूमि का खंडन, सिंचाई की कमी, तकनीकी पिछड़ापन, कृषि निवेश की कमी, ऋण की सीमित उपलब्धता और बाजार अस्थिरता प्रमुख हैं। इसके अलावा, भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियाँ तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ भी किसानों की आय को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसान इन चुनौतियों से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। केवल कृषि उत्पादन बढ़ाने से किसानों की आय में पर्याप्त वृद्धि नहीं हो सकती। इसके लिए बाजार सुधार, मूल्य स्थिरता और लागत में कमी जैसे पहलुओं पर भी ध्यान देना आवश्यक है। तकनीकी आधुनिकीकरण, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, कृषि विविधीकरण, प्रभावी MSP प्रणाली, डिजिटल कृषि बाजार, सुलभ कृषि ऋण, और फसल बीमा योजनाओं का विस्तार व इसके साथ ही, कृषि अनुसंधान और विस्तार सेवाओं को मजबूत करके व किसानों को प्रशिक्षण देकर कृषकों की आय में वृद्धि की जा सकती है। भारत में कृषि उत्पादकता और किसानों की आय बढ़ाने के लिए एक समग्र, समन्वित और दीर्घकालिक नीति दृष्टिकोण आवश्यक है। यदि सुझाए गए उपायों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो न केवल किसानों की आय में वृद्धि संभव है, बल्कि यह ग्रामीण विकास और समग्र आर्थिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

बीज शब्द (Keyword) : कृषि उत्पादकता, किसानों की आय, MSP, ग्रामीण विकास, कृषि ऋण, सिंचाई, भारत

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। 2013 के संदर्भ में, GDP में कृषि का योगदान लगभग 14% है, जबकि रोजगार में इसका योगदान 50% से अधिक है। इस असंतुलन से स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र में उत्पादकता कम है और आय असमान रूप से वितरित है। हरित क्रांति के बाद उत्पादन में वृद्धि हुई, परंतु यह वृद्धि सभी क्षेत्रों में समान नहीं रही, विशेष रूप से पूर्वी भारत और वर्षा आधारित क्षेत्रों में उत्पादकता अभी भी कम है। किसानों की आय स्थिर या धीमी

गति से बढ़ रही है, जिससे ग्रामीण गरीबी बनी हुई है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय कृषि की उत्पादकता और किसानों की आय पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है जिनमें से कुछ प्रमुख अध्ययन का विवरण निम्नवत है -

शुल्ट्ज (1964) ने कृषि विकास में मानव पूंजी के महत्व को रेखांकित किया और बताया कि किसानों की शिक्षा और तकनीकी ज्ञान उत्पादकता को प्रभावित करते हैं।

दांडेकर और रथ (1971) ने ग्रामीण गरीबी और कृषि आय के संबंध का विश्लेषण करते हुए पाया कि छोटे और सीमांत किसानों की आय अत्यंत कम होती है।

चंद्र (2001) के अनुसार, भारतीय कृषि की धीमी वृद्धि का प्रमुख कारण निवेश की कमी और सिंचाई सुविधाओं का अभाव है।

राव (2005) ने कृषि उत्पादकता में क्षेत्रीय असमानताओं को उजागर किया। उन्होंने पाया कि पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में उत्पादकता अधिक है, जबकि बिहार और उड़ीसा जैसे राज्यों में यह काफी कम है।

प्लानिंग कमीशन (2007) की रिपोर्ट के अनुसार, किसानों की आत्महत्या का प्रमुख कारण आय की अस्थिरता और ऋण भार है।

स्वामीनाथन (2010) ने सुझाव दिया कि कृषि में "Evergreen Revolution" की आवश्यकता है, जिसमें टिकाऊ उत्पादन वृद्धि पर जोर दिया जाए।

NSSO (2010) के आंकड़ों के अनुसार, भारत में औसत किसान की मासिक आय ▫ 3000 से कम थी, जो जीवन-निर्वाह के लिए अपर्याप्त है।

RBI (2012) की रिपोर्ट ने दर्शाया कि कृषि ऋण की उपलब्धता में वृद्धि हुई है, लेकिन यह मुख्यतः बड़े किसानों तक सीमित है।

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि कृषि उत्पादकता और किसानों की आय पर कई संरचनात्मक और संस्थागत कारक प्रभाव डालते हैं।

शोध पद्धति

इस शोध अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्तियों का प्रयोग किया गया है एवं NSSO (Situation Assessment Survey), CSO (National Accounts Statistics), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, RBI रिपोर्ट से प्राप्त 2000 -2012 की अवधि के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्रतिशत विश्लेषण, ट्रेंड विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन तकनीक का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाएँ

- कृषि उत्पादकता में वृद्धि से किसानों की आय में सकारात्मक वृद्धि होती है।
- सिंचाई और तकनीकी उपयोग कृषि उत्पादकता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।
- बाजार अस्थिरता किसानों की आय को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

आंकड़ों का विश्लेषण

भारत में प्रमुख खाद्यान्नों की उत्पादकता (टन/हेक्टेयर)

वर्ष	गेहूँ	धान	दालें	मक्का
2005	2.7	1.9	0.6	1.9
2010	3.0	2.1	0.7	2.2
2015	3.1	2.3	0.75	2.5
2018	3.4	2.4	0.8	2.6

स्रोत : Ministry of Agriculture, *Agricultural Statistics at a Glance* (2006–2018)

गेहूँ की उत्पादकता 2005–2018 के बीच लगभग **26%** बढ़ी। धान की उत्पादकता में **26%**, जबकि मक्का में **36%** वृद्धि देखी गई। दालों की उत्पादकता वृद्धि अत्यंत धीमी—**0.6 से 0.8 टन/हेक्टेयर**—जिसका प्रतिकूल प्रभाव किसानों की आय पर पड़ता है। सिंचित फसलों में वृद्धि अधिक और वर्षा–निर्भर फसलों में धीमी है।

किसान परिवारों की औसत मासिक आय (₹ में)

किसान वर्ग	खेती से आय	पशुपालन	गैर–कृषि कार्य	कुल मासिक आय
सीमांत (0–1 ha)	1,414	424	2,140	3,978
छोटे (1–2 ha)	2,380	736	1,780	4,896
मध्यम (2–4 ha)	3,802	1,276	1,633	6,711
बड़े (4+ ha)	8,100	3,136	2,632	13,868

स्रोत : NSSO, Situation Assessment Survey of Agricultural Households (2013)

सीमांत किसानों की 53% आय गैर–कृषि स्रोतों से प्राप्त होती है—यह कृषि की कम लाभप्रदता को दर्शाता है। खेती से आय खेत के आकार के साथ तेज़ी से बढ़ती है, जिससे **भूमि-संरचना असमानता** का पता चलता है। बड़े किसानों की खेती से आय सीमांत किसानों की तुलना में लगभग **6 गुना** है।

कृषि में निवेश (₹करोड़)

वर्ष	निवेश (₹ करोड़)
2005–06	180,931
2010–11	230,860
2015–16	249,905
2017–18	254,582

स्रोत : RBI Handbook of Statistics on Indian Economy (pre-2019)

तालिका से स्पष्ट है की कृषि में कुल निवेश वृद्धि बहुत धीमी है — 12 वर्षों में **केवल 40%** वृद्धि। निजी निवेश स्थिर रहा, जिससे तकनीकी उन्नयन धीमा रहा। सिंचाई एवं अवसंरचना निवेश अपर्याप्त रहा।

उपर्युक्त तालिकाओं से स्पष्ट है कि भारत में प्रमुख खाद्यान्नों की उत्पादकता बढ़ी है, किंतु वृद्धि की दर असमान है। गेहूँ और मक्का में वृद्धि अधिक, जबकि दालों में वृद्धि नगण्य है। यह खाद्य सुरक्षा पर दबाव डालता

है और आय वृद्धि में बाधा बनता है। वर्षा–निर्भर फसलों की कम उत्पादकता किसानों को शोध–आधारित तकनीक अपनाने की जरूरत दर्शाती है।

तालिका से पता चलता है कि किसानों की आय उनकी भूमि–धारिता पर पूरी तरह निर्भर है। सीमांत किसान कृषि पर जीविका नहीं चला सकते, इसलिए वे मजदूरी या गैर–कृषि कार्यों पर निर्भर रहते हैं—यह कृषि प्रणाली की कमजोर लाभप्रदता का संकेत है। बड़े किसानों की लाभप्रदता अधिक होने से नीति–निर्माताओं के सामने छोटे किसानों को लक्ष्य कर योजनाएँ बनाना आवश्यक है। कृषि निवेश में वृद्धि बहुत धीमी रही है। 2005–2018 के बीच निवेश में अपेक्षित विस्तार न हो पाने से सिंचाई, भंडारण, अनुसंधान एवं मशीनरी अपनाने में बाधाएँ उत्पन्न हुई। इससे उत्पादकता एवं किसानों की आय दोनों प्रभावित हुए।

समग्र रूप से, डेटा यह दर्शाता है कि—

- उत्पादकता बढ़ी है, पर आय वृद्धि सीमित है।
- भूमि बँटवारा, निवेश की कमी, बाजार पहुँच जैसी संरचनात्मक समस्याएँ कृषि आय वृद्धि में बाधा हैं।
- तकनीकी उपयोग बड़े किसानों तक सीमित है।

समस्याएँ/चुनौतियाँ

भारत में कृषि उत्पादकता और किसानों की आय को प्रभावित करने वाली समस्याएँ बहुआयामी और संरचनात्मक हैं। ये चुनौतियाँ न केवल उत्पादन से संबंधित हैं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी तथा संस्थागत कारकों से भी जुड़ी हुई हैं। कृषि उत्पादकता और किसानों की आय को प्रभावित करने वाली प्रमुख समस्याएँ निम्नवत हैं –

1. भूमि का खंडन और लघु जोतों की समस्या

भारत में अधिकांश किसान छोटे और सीमांत श्रेणी के हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी भूमि के विभाजन के कारण जोत का आकार लगातार घटता जा रहा है। छोटे आकार की जोतों पर आधुनिक कृषि तकनीकों का उपयोग करना कठिन होता है, जिससे उत्पादकता प्रभावित होती है। इसके अलावा, छोटे किसान जोखिम वहन करने में सक्षम नहीं होते, जिससे वे नई तकनीकों और उन्नत बीजों को अपनाने से हिचकिचाते हैं।

2. सिंचाई सुविधाओं की कमी और मानसून पर निर्भरता

भारत की लगभग आधी कृषि भूमि अभी भी वर्षा पर निर्भर है । अनियमित मानसून, सूखा या बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ कृषि उत्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं । सिंचाई के पर्याप्त साधनों की कमी के कारण किसान साल में केवल एक ही फसल ले पाते हैं, जिससे उनकी आय सीमित रहती है।

3. तकनीकी पिछड़ापन और नवाचार का अभाव

हालांकि हरित क्रांति ने कुछ क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाया, लेकिन आज भी अधिकांश किसान पारंपरिक तकनीकों का उपयोग करते हैं। उन्नत बीज, मशीनीकरण, ड्रिप सिंचाई और सटीक कृषि जैसी आधुनिक तकनीकों का प्रसार सीमित है। तकनीकी जानकारी का अभाव और प्रशिक्षण की कमी भी इस समस्या को बढ़ाती है।

4. कृषि निवेश में कमी

कृषि क्षेत्र में सार्वजनिक और निजी निवेश की कमी एक प्रमुख समस्या है। आधारभूत संरचनाएँ जैसे सड़क, भंडारण, कोल्ड स्टोरेज, और परिवहन सुविधाएँ पर्याप्त विकसित नहीं हैं। इससे फसल के बाद होने वाले नुकसान बढ़ जाते हैं, जिससे किसानों की आय में कमी आती है।

5. ऋण और वित्तीय संसाधनों की सीमित उपलब्धता

हालांकि बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से कृषि ऋण उपलब्ध कराया जाता है, लेकिन छोटे और सीमांत किसानों को अभी भी पर्याप्त ऋण नहीं मिल पाता। वे अक्सर साहूकारों पर निर्भर रहते हैं, जो उच्च ब्याज दर वसूलते हैं। इससे किसानों पर कर्ज का बोझ बढ़ता है और कई बार वे ऋण जाल में फँस जाते हैं।

6. बाजार अस्थिरता और मूल्य निर्धारण की समस्या

कृषि उत्पादों के मूल्य अत्यधिक अस्थिर होते हैं। किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता, क्योंकि बाजार में मध्यस्थों/बिचौलियों का प्रभुत्व होता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की व्यवस्था होने के बावजूद इसका लाभ सभी किसानों तक नहीं पहुँचता, विशेष रूप से छोटे किसान MSP प्रणाली से बाहर रह जाते हैं।

7. भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियाँ

भारत में पर्याप्त गोदाम और कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं का अभाव है। फल, सब्जियाँ और अन्य नाशवान उत्पादों का बड़ा हिस्सा खराब हो जाता है। कमजोर आपूर्ति श्रृंखला के कारण उत्पाद बाजार तक समय पर नहीं पहुँच पाते, जिससे किसानों को कम कीमत मिलती है।

8. जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियाँ

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कृषि पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा और बाढ़ जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं जिससे फसल उत्पादन में अनिश्चितता आती है और किसानों की आय प्रभावित होती है। इसके अलावा, मिट्टी की उर्वरता में कमी और जल संसाधनों का क्षरण भी गंभीर समस्या है।

9. संस्थागत और नीतिगत कमियाँ

कृषि नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो पाता। कई योजनाएँ कागजों तक सीमित रह जाती हैं। किसानों को सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं होती या उन्हें इनका लाभ लेने में कठिनाई होती है। कृषि विस्तार सेवाओं की कमी के कारण नई तकनीकों और योजनाओं की जानकारी किसानों तक नहीं पहुँच पाती।

10. सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी भी कृषि उत्पादकता को प्रभावित करती है। अशिक्षा के कारण किसान नई तकनीकों को अपनाने में पीछे रह जाते हैं। इसके अलावा, गरीबी और असमानता के कारण किसान जोखिम लेने से बचते हैं।

सुझाव/उपाय :

भारत में कृषि उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आय में स्थायी सुधार लाने के लिए बहुआयामी, समन्वित और दीर्घकालिक रणनीतियों की आवश्यकता है। इस दृष्टि से केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि लागत में कमी, मूल्य स्थिरता, बाजार पहुंच और जोखिम प्रबंधन को भी समान रूप से महत्व देना आवश्यक है। भारत में कृषि उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आय में स्थायी सुधार लाने की दृष्टि से निम्नलिखित प्रमुख सुझाव/उपाय इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं –

1. तकनीकी आधुनिकीकरण और नवाचार का प्रसार

कृषि में आधुनिक तकनीकों का उपयोग बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। उन्नत किस्म के बीज, जैव-प्रौद्योगिकी, ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई, तथा सटीक कृषि को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। कृषि यंत्रीकरण से उत्पादन लागत कम होगी और उत्पादकता बढ़ेगी। इसके लिए सरकार को सब्सिडी, प्रशिक्षण और डेमो प्रोजेक्ट्स के माध्यम से किसानों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

2. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार और जल प्रबंधन

कृषि को मानसून पर निर्भरता से मुक्त करना आवश्यक है। इसके लिए नहरों, ट्यूबवेल, चेक डैम, वर्षा जल संचयन और माइक्रो-इरिगेशन तकनीकों का विकास किया जाना चाहिए। जल संरक्षण और कुशल जल प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना होगा। "प्रति बूंद अधिक फसल" जैसी अवधारणाओं को व्यवहार में लाना चाहिए।

3. कृषि विविधीकरण (Diversification)

किसानों को केवल पारंपरिक फसलों (गेहूँ-धान) पर निर्भर रहने के बजाय बागवानी, फल-सब्जी उत्पादन, डेयरी, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन और कृषि-आधारित उद्योगों की ओर प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे जोखिम का विभाजन होगा और आय के स्रोत बढ़ेंगे। उच्च मूल्य वाली फसलों का उत्पादन किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकता है।

4. बाजार सुधार और मूल्य समर्थन प्रणाली का सुदृढ़ीकरण

किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलना सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की व्यवस्था को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाया जाना चाहिए। इसके साथ ही, कृषि विपणन प्रणाली में सुधार करते हुए बिचौलियों की भूमिका को कम करना चाहिए। किसानों को सीधे बाजार से जोड़ने के लिए ई-ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म (जैसे e-NAM) को व्यापक स्तर पर लागू किया जाना चाहिए।

5. कृषि ऋण और वित्तीय समावेशन

छोटे और सीमांत किसानों को सस्ती दर पर पर्याप्त ऋण उपलब्ध कराना आवश्यक है। इसके लिए बैंकिंग प्रणाली को अधिक समावेशी बनाया जाना चाहिए। किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) जैसी योजनाओं का विस्तार किया जाना चाहिए। साथ ही, साहूकारों पर निर्भरता कम करने के लिए संस्थागत ऋण को सरल और सुलभ बनाया जाना चाहिए।

6. भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) का विकास

फसल के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए आधुनिक गोदाम, कोल्ड स्टोरेज और लॉजिस्टिक्स सुविधाओं का विकास आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में कोल्ड चेन इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया जाना चाहिए । इससे नाशवान उत्पादों की बर्बादी कम होगी और किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त होगा।

7. फसल बीमा और जोखिम प्रबंधन

कृषि एक जोखिमपूर्ण व्यवसाय है, इसलिए किसानों को प्राकृतिक आपदाओं, मूल्य गिरावट और अन्य जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करना आवश्यक है। फसल बीमा योजनाओं को अधिक प्रभावी और व्यापक बनाया जाना चाहिए। बीमा क्लेम की प्रक्रिया को सरल और तेज किया जाना चाहिए, ताकि किसानों को समय पर सहायता मिल सके।

8. कृषि अनुसंधान और विस्तार सेवाओं का सुदृढ़ीकरण

कृषि अनुसंधान संस्थानों को अधिक संसाधन और समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए ताकि नई तकनीकों और उन्नत किस्मों का विकास हो सके। साथ ही, कृषि विस्तार सेवाओं को मजबूत किया जाना चाहिए, जिससे नई जानकारी और तकनीक किसानों तक पहुँच सके। किसानों को नियमित प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से सशक्त बनाया जाना चाहिए।

9. संस्थागत सुधार और नीतिगत समन्वय

कृषि क्षेत्र में विभिन्न योजनाओं और नीतियों के बीच समन्वय आवश्यक है। नीति निर्माण और क्रियान्वयन के बीच की दूरी को कम किया जाना चाहिए। किसानों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देने और उनके लाभ तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी तंत्र विकसित किया जाना चाहिए।

10. सामाजिक और मानव संसाधन विकास

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास पर ध्यान देना आवश्यक है। शिक्षित और प्रशिक्षित किसान नई तकनीकों को आसानी से अपनाते हैं। इसके अलावा, महिला किसानों की भागीदारी बढ़ाना भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे कृषि कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

11. न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) का सीमित लाभ

MSP नीति होने के बावजूद देश के अधिकांश किसान उसका वास्तविक लाभ नहीं ले पाते, क्योंकि सरकारी खरीद मुख्यतः धान और गेहूँ तक सीमित है और इनकी भी खरीद कुछ राज्यों में ही व्यापक रूप से होती है।

निष्कर्ष

भारत में कृषि उत्पादकता और किसानों की आय के बीच सकारात्मक संबंध है, लेकिन यह संबंध कमजोर है। उत्पादकता में वृद्धि के बावजूद किसानों की आय अपेक्षित स्तर तक नहीं बढ़ी है। इसका मुख्य कारण संरचनात्मक समस्याएँ, बाजार असमानताएँ और नीतिगत कमियाँ हैं। यदि सरकार और निजी क्षेत्र मिलकर तकनीकी सुधार, बाजार सुधार और निवेश बढ़ाते हैं, तो किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

भारत में कृषि उत्पादकता और किसानों की आय का प्रश्न केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और विकासात्मक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कृषि क्षेत्र में उत्पादकता और आय के बीच एक सकारात्मक संबंध अवश्य है, किन्तु यह संबंध अपेक्षित रूप से मजबूत और संतुलित नहीं है। उत्पादकता में वृद्धि के बावजूद किसानों की आय में उसी अनुपात में वृद्धि नहीं हो पाई है, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। भारतीय कृषि अभी भी अनेक संरचनात्मक और संस्थागत समस्याओं से ग्रस्त है। भूमि का खंडन, सिंचाई सुविधाओं की कमी, तकनीकी पिछड़ापन, सीमित निवेश, ऋण की अपर्याप्त उपलब्धता और बाजार अस्थिरता जैसी समस्याएँ किसानों की आय को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय असंतुलन ने कृषि को और अधिक अनिश्चित बना दिया है, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। केवल उत्पादन बढ़ाना किसानों की आय बढ़ाने के लिए पर्याप्त नहीं है। जब तक किसानों को उनकी उपज का उचित और स्थिर मूल्य नहीं मिलेगा, तब तक उनकी आय में वास्तविक सुधार संभव नहीं है। वर्तमान बाजार संरचना में बिचौलियों का प्रभुत्व और मूल्य निर्धारण की अपारदर्शिता किसानों को उनके श्रम का उचित प्रतिफल प्राप्त करने से वंचित करती है। अतः कृषि विपणन सुधार इस दिशा में एक अनिवार्य कदम है।

छोटे और सीमांत किसान, जो भारतीय कृषि का अधिकांश हिस्सा हैं, सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इनके पास सीमित संसाधन, कम जोखिम वहन क्षमता और तकनीकी जानकारी का अभाव होता है, जिसके कारण वे नई तकनीकों और नवाचारों को अपनाने में पीछे रह जाते हैं। इसलिए, नीतियों और योजनाओं का विशेष ध्यान इस वर्ग पर केंद्रित होना चाहिए।

निष्कर्ष स्वरूप हम यह कह सकते है कि कृषि क्षेत्र में समग्र और बहुआयामी सुधारों की आवश्यकता है। तकनीकी आधुनिकीकरण, सिंचाई का विस्तार, कृषि विविधीकरण, बेहतर बाजार व्यवस्था, सस्ती और सुलभ ऋण सुविधा, तथा प्रभावी फसल बीमा योजनाएँ किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इसके साथ ही, कृषि अनुसंधान और विस्तार सेवाओं को मजबूत करना तथा किसानों को शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना भी आवश्यक है। यहाँ यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि भारत में कृषि उत्पादकता और किसानों की आय में सुधार के लिए केवल अल्पकालिक उपाय पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि दीर्घकालिक और टिकाऊ रणनीतियों की आवश्यकता है। सरकार, निजी क्षेत्र और किसानों के बीच समन्वित प्रयासों के माध्यम से ही इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यदि उपयुक्त नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए और कृषि क्षेत्र में निवेश तथा नवाचार को प्रोत्साहित किया जाए, तो न केवल किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव होगी, बल्कि यह ग्रामीण विकास, गरीबी उन्मूलन और समग्र आर्थिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस प्रकार, कृषि क्षेत्र का सुदृढ़ीकरण भारत के समावेशी और सतत विकास के लिए अनिवार्य है, और किसानों की आय में वृद्धि इस दिशा में एक केंद्रीय लक्ष्य होना चाहिए।

संदर्भ (References)

1. Agarwal, B. (2014). *Gender and green governance: The political economy of women's presence within and beyond community forestry*. Oxford University Press.
2. Birthal, P. S., Joshi, P. K., & Gulati, A. (2005). Vertical coordination in high‑value commodities: Implications for smallholders. *Quarterly Journal of International Agriculture*, 44(3), 281–299.
3. Chand, R. (2012). Development policies and agricultural markets. *Economic & Political Weekly*, 47(52), 53–63.

4. Chand, R., Kumar, P., & Kumar, S. (2011). *Total factor productivity and returns to public investment on agricultural research in India*. National Centre for Agricultural Economics and Policy Research (NCAP).
5. Chand, R., Saxena, R., & Rana, S. (2015). Estimates and analysis of farm income in India, 1983–84 to 2011–12. *Economic & Political Weekly*, 50(22), 139–145.
6. Desai, S., Dubey, A., & Joshi, B. (2015). *Human development in India: Challenges for a society in transition*. Oxford University Press.
7. FICCI. (2015). *Doubling farmers' income: Issues and challenges*. Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry.
8. Ghosh, M. (2010). Agricultural productivity in North-East India: Trends and determinants. *Journal of Developing Areas*, 44(2), 45–66.
9. Government of India. (2018). *Agricultural statistics at a glance 2017*. Directorate of Economics and Statistics, Ministry of Agriculture & Farmers Welfare.
10. Government of India. (2016). *Report of the Committee on Doubling Farmers' Income by 2022*. Ministry of Agriculture & Farmers Welfare.
11. Gulati, A., & Narayanan, S. (2003). *The subsidy syndrome in Indian agriculture*. Oxford University Press.
12. Gulati, A., Jain, S., & Hoda, A. (2018). *Supporting Indian farmers: Price support or direct income/investment support?* Indian Council for Research on International Economic Relations (ICRIER).
13. ICAR. (2013). *Vision 2050*. Indian Council of Agricultural Research.
14. Jain, R., & Bal, H. (2012). Agricultural marketing reforms in India. *International Journal of Research in Commerce, Economics and Management*, 2(9), 111–118.
15. Kannan, E., & Sundaram, S. (2011). Analysis of trends in India's agricultural growth. *Working Paper Series*, Institute for Social and Economic Change, Bangalore.
16. Kumar, P., & Mittal, S. (2006). Agricultural productivity trends in India: Sustainability issues. *Agricultural Economics Research Review*, 19(2), 71–88.
17. Mukherjee, A., Pal, P., & Ghosh, J. (2017). *The market that failed: A decade of neoliberal economic reforms in India*. Orient Blackswan.
18. NITI Aayog. (2018). *Strategy for New India @ 75*. Government of India.
19. Pingali, P. (2007). Agricultural growth and economic development: A view through the globalization lens. *Agricultural Economics*, 37, 1–12.
20. Planning Commission. (2013). *Twelfth Five Year Plan (2012–17): Agriculture and Rural Development*. Government of India.
21. Reddy, A. A., & Mishra, D. (2009). Agrarian crisis in India: Causes and consequences. *Indian Journal of Agricultural Economics*, 64(4), 614–628.
22. Reserve Bank of India. (2017). *Handbook of Statistics on Indian Economy*. Reserve Bank of India.
23. Sharma, V. P. (2016). *Doubling farmers' income: A myth or a reality?* Indian Institute of Management Ahmedabad (IIMA) Working Paper.

24. Singh, S. (2011). Contract farming and agricultural diversification in Punjab: A research review. *Indian Journal of Agricultural Economics*, 66(3), 408–421.

25. Swaminathan, M. S. (2006). Science and shaping of Indian agriculture. *Current Science*, 90(6), 755–760.